विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-१५/१०/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: अष्टम: पाठनाम विचित्र साक्षी

पाठांश –

विचित्रा दैवगति:। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन् चौर: गृहाभ्यन्तरं प्रविष्ट:। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायित: ।चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथि: चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च ,परं विचित्रमघटत् ।चौर: एव उच्चै: क्रोशितुमारभत् "चौरोऽयं चौरोऽयं इति ।तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धा: ग्रामवासिन: स्वगृहात् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्।यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर: आसीत् ।तत्क्षणमेव रक्षापुरुष: तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति मत्वा कारागृहे प्राक्षिपत्।

शब्दार्था:

विचित्रा -अनोखी , दैवगति: - भाग्य की गति , आदाय- लेकर , मञ्जूषां – सन्दूक को ,

गृहाभ्यन्तरम् – घर के अन्दर , निहिताम् – रखी हुई , पादध्वनिना – पैरों की आवाज से ,

प्रबुद्ध: - जगा हुआ , अन्वधावत् -पीछे दौडा , अगृह्णात् – पकड लिया , क्रोशितुम् - जोर-जोर से चिल्लाना

तारस्वरेण – ऊंची आवाज से , वराकम् – बेचारे को , अभर्त्सयन् - निन्दा करने लगे , रक्षापुरुष: -सिपाही

प्रख्याप्य – कहकर , प्राक्षिपत् – डाल दिया-

अर्थ- भाग्य की गति बड़ी अनोखी होती है।उसी रात में उस घर में कोई चोर घर के अन्दर घुस गया। वहां रखे एक संदूक को लेकर भागा ।चोर के पैरों की आवाज से जागा अतिथि चोर के शक से उसके पीछे भागा और पकड़ लिया, परंतु अनोखी घटना घटी।चोर ने ही जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया-"यह चोर है, यह चोर है"। उसकी आवाज से जागे गांव के निवासी अपने घर से निकलकर वहां आ गये और बेचारे अतिथि को ही चोर मानकर निन्दा करने लगे , जबकि गांव का ही सिपाही ही चोर था ।उसी क्षण रक्षक ने उस अतिथि को 'यह चोर है' ऐसा मानकर जेल में डाल दिया।